

विश्व पर्यावरण दिवस पर 'ग्रीन गुड डीड' का संदेश देंगे अमिताभ बच्चन



नई दिल्ली—भारत की मेजबानी में इस साल पांच जून को मनाये जाने वाले विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर बॉलीवुड स्टार अमिताभ बच्चन दुनिया को प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिये केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय के 'ग्रीन गुड डीड अभियान' का संदेश देंगे। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री डा. हर्षवर्धन ने विश्व पर्यावरण दिवस के कार्यक्रम की रूपरेखा पेश करते हुये जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कार्बन उत्सर्जन के बारे में पेरिस समझौते को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कारगर पहल को वैश्विक मान्यता प्रदान करते हुये संयुक्त राष्ट्र ने इस साल विश्व पर्यावरण दिवस भारत की मेजबानी में मनाने का फैसला किया। डा. हर्षवर्धन ने बताया कि इस बार पर्यावरण दिवस की मुख्य थीम प्लास्टिक के प्रयोग को रोकने पर आधारित होगी। आयोजन की व्यापक तैयारियों को अंतिम रूप देते हुये अमिताभ बच्चन ने पर्यावरण संकट से दुनिया को बचाने की मुहिम में अपनी भागीदारी भी सुनिश्चित करने की पहल की है। जल्द ही यह मुहिम जागरूकता अभियान के रूप में शुरू की जायेगी। उन्होंने बताया कि दुनिया भर में

जिसमें मोदी विश्व समुदाय को संबोधित कर पर्यावरण के प्रति भारत की प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिये किये प्रमुख कार्यों को पेश करेंगे। साथ ही 'ग्रीन गुड डीड' की वैश्विक मान्यता के प्रभाव से भी भारत और अन्य विकासशील देशों में होने वाले गुणात्मक बदलावों की जानकारी देंगे। इसके पहले एक से चार जून तक दिल्ली और सभी राज्यों की राजधानी में कार्यशालाओं और प्रदर्शनों का आयोजन किया जायेगा। इनमें राज्यों के मुख्यमंत्री और केन्द्रीय मंत्री देश भर में 'ग्रीन गुड डीड' के प्रति जागरूकता अभियानों में सक्रिय भागीदारी करेंगे।

प्रदूषण के खिलाफ सरकारों के साथ जनभागीदारी वाले अभियान की कार्ययोजना को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) ने भी स्वीकार किया है। इस मुहिम के तहत 'ग्रीन गुड डीड' में प्लास्टिक के प्रयोग को ना कहने सहित लगभग 600 ऐसे कामों की सूची तैयार की गयी है, जिनमें से अपनी मर्जी के कुछ काम हर व्यक्ति चुनकर अगर करेगा तो पर्यावरण को दूषित होने से बचाने में काफी मदद मिलेगी और इससे भारत में लोगों की कार्यशैली, नजरिये और जीवन पद्धति में भी बदलाव होगा जिसे 'ग्रीन गुड बिहेवियर' नाम दिया गया है।

इससे पहले मंत्रालय में संयुक्त सचिव एके जैन ने एक जून से पांच जून तक चलने वाले देशव्यापी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुये बताया कि मुख्य कार्यक्रम पांच जून को दिल्ली में प्रधानमंत्री मोदी की अध्यक्षता में होगा। जिसमें मोदी विश्व समुदाय को संबोधित कर पर्यावरण के प्रति भारत की प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिये किये प्रमुख कार्यों को पेश करेंगे। साथ ही 'ग्रीन गुड डीड' की वैश्विक मान्यता के प्रभाव से भी भारत और अन्य विकासशील देशों में होने वाले गुणात्मक बदलावों की जानकारी देंगे। इससे पहले एक से चार जून तक दिल्ली और सभी राज्यों की राजधानी में

कार्यशालाओं और प्रदर्शनों का आयोजन किया जायेगा। इनमें राज्यों के मुख्यमंत्री और केन्द्रीय मंत्री देश भर में 'ग्रीन गुड डीड' के प्रति जागरूकता अभियानों में सक्रिय भागीदारी करेंगे। चार जून को दिल्ली में सभी राज्यों के पर्यावरण मंत्रियों की बैठक होगी जिसमें सभी अभियानों की प्रगति की समीक्षा की जायेगी। इस दौरान एक जून से यूएनईपी के प्रमुख और अन्य आला अधिकारियों का दल भारत में इस अभियान में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित करेगा। डा. हर्षवर्धन ने भारत के अब तक प्रयासों की जानकारी देते हुये बताया कि मंत्रालय के दिल्ली स्थित मुख्यालय 'पर्यावरण भवन' को प्लास्टिक मुक्त कर दिया गया है। उन्होंने कहा "मंत्रालय के देश भर में मौजूद कार्यालयों को भी प्लास्टिक मुक्त करने के लिये कहा गया है। जल्द ही सभी मंत्रालयों और राज्य सरकारों से अपनी इमारतों को प्लास्टिक मुक्त करने के लिये कहा जायेगा।" साथ ही नदियों और समुद्र तटों को साफ करने का अभियान वह अगले सप्ताह शुरू करेंगे। इसके लिये दो दर्जन स्थानों को चिन्हित किया गया है। उन्होंने कहा कि भारत का मकसद दुनिया को यह संदेश देना है कि पर्यावरण दिवस पर पेड़ लगाने जैसे सांकेतिक काम करने के बजाय इसे प्रदूषण फैलाने वाली जनसामान्य की आदतों में बदलाव से जोड़ कर आंदोलन बनाना है।

निपाह वायरस मचा रहा है तहलका, इस तरह करें रोकथाम



निपाह वायरस की दहशत इस वक्त पूरे देश में फैली हुई है। पिछले कुछ दिनों से निपाह नाम की एक नई उभरती हुई बीमारी ने पूरे स्वास्थ्य तंत्र को सकंभ में डाल दिया है। कहना गलत नहीं होगा कि निपाह के खतरनाक वायरस की दस्तक से पूरा भारत हलकान हो गया है। फिलहाल यह बीमारी हमारी पूरी चिकित्सा व्यवस्था के लिए इस समय चुनौती बनी हुई है। कहा जाता है कि निपाह वायरस जिस तैजी से फैलता है उसे रोक पाना बहुत मुश्किल होता है। फिलहाल भारत के लिए यह बीमारी एकदम नई है इसलिए हमारे स्वास्थ्य महकमे के पास इसे रोकने के लिए मुकम्मल इंतजाम नहीं है। हालांकि कोशिशें हर संभव की जा रही हैं। हिंदुस्तान में निपाह वायरस ने अपनी पहली दस्तक पिछले सप्ताह केरल के कोझीकोड जिले में दी है। जहां कुछ ही घंटों में कई लोग इसके चपेट में आ गए। चपेट में आए करीब दर्जन भर लोगों की मौतें भी हो चुकी हैं। करीब 10 से ज्यादा मरीज विभिन्न अस्पतालों में भर्ती हैं। इस वायरस के प्रकोप में आए करीब चालीस

से ज्यादा बीमार लोग टॉप चिकित्सकों की निगरानी में हैं। निगरानी इसलिए की जा रही है ताकि उनके संपर्क में आकर दूसरे लोग भी बीमार न हों। चिकित्सकों की मानें तो तेज हवा की गति की भांति यह वायरस फैलता है। जो व्यक्ति ठीक से इस वायरस के चपेट में आ जाता है वह कुछ ही घंटों के भीतर कोमा में चला जाता है। इस स्थिति के चलते पूरा देश भयभीत हो गया है। केरल के बाद आसपास के कुछ और राज्यों से भी केस सामने आए हैं। पुणे स्थित विरोलाजी इंस्टीट्यूट ने कुछ मरीजों के खून से तीन नमूनों में निपाह वायरस होने की पुष्टि की है। स्थिति और न बिगड़े इसके लिए सरकार ने इस पर केंद्र सरकार से तत्काल मदद मुहैया कराने की गुहार लगाई है। उनकी गुहार को गंभीरता से लेते हुए केंद्र ने तुरंत एनसीडीसी की टीम को केरल भेज दिया है। टीम वायरस प्रभावित इलाकों का दौरा कर रही है। हालात और खराब न हों इसके लिए विदेशी तंत्र का भी सहयोग लिया जा रहा है। केंद्र सरकार ने मलेशिया सरकार से भी संपर्क किया है। मलेशिया दो दशक पहले इस बीमारी का भुक्तभोगी है।

पिछले कुछ दिनों से निपाह नाम की एक नई उभरती हुई बीमारी ने पूरे स्वास्थ्य तंत्र को सकंभ में डाल दिया है। कहना गलत नहीं होगा कि निपाह के खतरनाक वायरस की दस्तक से पूरा भारत हलकान हो गया है। फिलहाल यह बीमारी हमारी पूरी चिकित्सा व्यवस्था के लिए इस समय चुनौती बनी हुई है। कहा जाता है कि निपाह वायरस जिस तैजी से फैलता है उसे रोक पाना बहुत मुश्किल होता है।

हिंदुस्तान में निपाह बीमारी की पहचान पहली बार की गई है। दरअसल ये जानवरों में पाई जाने वाली बीमारी बताई जा रही है। विशेषकर चमगादड़ और सूअर से फैलने वाली बीमारी है। इन जानवरों से होती हुई ये बीमारी इंसानों में समा जाती है। शुरूआत में इसका पता नहीं चलता। लेकिन जब पता चलता है तो बहुत देर हो जाती है। इस बीमारी पर नियंत्रण के लिए फिलहाल अभी हमारे चिकित्सकों के पास कोई कारगर चिकित्सा विधि भी नहीं है जो वह प्रकोपित मरीजों को मुहैया करा सके। बचाव व रोकथाम ही मात्र एक सुझाव है। गंदे जानवरों से दूर रहें और उन्हें पास न आने दें। केंद्र द्वारा भेजी गई नेशनल सेंटर फॉर डीजीसी कंट्रोल की टीम केरल में निपाह वायरस प्रभावित इलाकों का जायजा ले रही है। उनकी प्राथमिक रिपोर्ट आई है जिसमें बताया गया है कि बच्चों को पालतू जानवरों से एकदम दूर रखा जाए। क्योंकि निपाह वायरस बच्चों को सबसे पहले और आसानी से अपनी गिरफ्त में लेता है। उनकी रिपोर्ट के बाद केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से पूरे देश में चेतावनी के तौर पर सचेत प्रसारित किया है कि गंदे जानवरों के संपर्क से दूर रहें। इसके अलावा अपने बचाव के लिए जरूरी सावधानियां बरतनी चाहिए।

भारत से पहले निपाह बीमारी ने जून 2004 में पड़ोसी राज्य बांग्लादेश में भी खलबली मचाई थी। उस समय जानवरों में नहीं बल्कि वहां खजूर की खेती करने वाले किसानों में यह बीमारी फैली थी। तब भी कई लोग मारे गए थे। बांग्लादेश में करीब दो माह तक आपात स्थिति बनी रही थी। बीमारी से बचने के लिए लोगों ने पलायन शुरू कर दिया है। खुद के बचाव के लिए लोगों ने अपने घरों को छोड़कर जंगलों में डेरा डाल लिया था। सरकार ने सभी पालतू जानवरों को पालने के लिए कुछ माह तक प्रतिबंध भी लगा दिया था। निपाह वायरस को लेकर ऐसी ही स्थिति आज से करीब बीस साल पहले मलेशिया के कांपुंग सुंगई शहर में भी उत्पन्न हो गई थी। जहां

निपाह वायरस ने सैंकड़ों लोगों को अपने आगोश में ले लिया था। बीमारी का जब तक पता चला तब तक कई लोग मर चुके थे। उसी दौरान इस बीमारी को निपाह का नाम दिया गया था।

खैर, हमारे देश में निपाह को नेस्तनाबूत करने के लिए कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी जा रही है। हर संभव कोशिशें की जा रही हैं। टॉप चिकित्सक इस बीमारी से लड़ने के लिए कमर काट चुके हैं। दिल्ली स्थित सर गंगाराम अस्पताल के सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉक्टर अनिल अरोड़ा की मानें तो भारत में इस तरह के वायरस को पता करने की अतिआधुनिक सुविधाएं हैं लेकिन फिर भी सटीक जानकारी नहीं हो पाती है। उनके मुताबिक निपाह वायरस चमगादड़ से फलों में और फलों से इंसानों और जानवरों पर आक्रमण करता है। उनका मानना है कि वायरस का पता कैसे आसानी से लग जाता है। वायरस प्रभावित इलाकों में जब इंसान को सांस लेने में दिक्कत होने लगे तो तुरंत जांच करवानी चाहिए। इस वायरस से प्रभावित शख्स को सांस लेने की दिक्कत होती है फिर दिमाग में जलन महसूस होती है। वक्त पर इलाज नहीं मिलने पर मौत हो जाती है।

इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने भी इस संबंध में एक कमेटी गठित की है। जो बीमारी की तह तक जाने में जुटी है। इसके साथ वायरस की जद में ज्यादा लोग न आ सके इसके लिए उपाय किए जा रहे हैं। यह बहुत ही अच्छी बात कि कोई समस्या आने पर सभी की एकजुटता सामने आए। सामूहिक एकता ही बड़ी समस्या को परास्त करती है। ऐसा ही इस वक्त निपाह के लिए किया जा रहा है। एहतियातन के तौर पर सभी हवाई अड्डों पर अलर्ट जारी किया गया है। जितने भी विदेशी महेमान आए उनकी स्वास्थ्य जांच की जाए। अगर कोई निपाह वायरस से पीड़ित पाया जाए तो उसे जरूरी चिकित्सा मुहैया कराने के लिए अस्पताल भेजा जाए।